संस्कृत व्याकरण में प्रज्ञा अभिगम

भरतकुमार पी. माली
पीएच. डी. स्टुडन्ट (शिक्षण शास्त्र)
भागवंत युनिवर्सिटी, अजमेर (राज.)

सारांश :

वर्तमान शिक्षा प्रणाली के सामने अनेक चुनौतियाँ है। उसमें सबसे बडी चुनौति यह है की विद्यार्थीयों की अध्ययन के प्रति अभिरुचि कम होना। यह चुनौति समस्या बनकर उभर आ रही है और इस कारण उच्च शिक्षा को विद्यार्थी नकारात्मक भूमिका से देख रहे है। इसलिए प्रस्तुत संशोधन पेपर में प्रस्तुत समस्या निर्मित की और ध्यान दिया गया है। समस्या निर्मिती के स्थान पर अगर ध्यान दिया जाये तो वह समस्या उग्र रुप से उभर नहीं आ सकती। यह सोचते हुए विद्यार्थीयों की अध्ययन में भी अभिरुची कैसी विकसित की जाए ? इसका प्रयोग क्या हो सकता है ? प्रस्तुत संशोधन पेपर में इस पश्नों को सामने रखते हुए विद्यार्थीयों की संस्कृत व्याकरण में अभिरुची कैसी विकसित की जा सकती है इसके लिए संस्कृत व्याकरण में प्रज्ञा अभिगम का प्रयोग करके अध्ययन में रस एवं प्रेरणा जाग्रत होती है। छात्रों में इसका एक अन्वेषण करने का प्रयास है।

१. प्रस्तावना

शिक्षक का वर्ग में व्यवहार शिक्षा की गुणवत्ता और बच्चों के सर्वांगीण विकास को असरकारक बनानेवाला तत्त्व है। वर्ग व्यवहार अर्थात् शिक्षक एवं छात्र के बीच ज्ञान के आदान प्रदान की क्रिया। यह क्रिया जितनी सहज, सरल, आनंददायी होगी उतना ही शिक्षा का स्तर उत्तम होगा। आधुनिक शिक्षा के क्षेत्र में एक अच्छा शिक्षक हमेंशा विद्यार्थी को सिखाने से अधिक विद्यार्थी स्वयं सिखे ऐसे प्रयत्न अधिक करता है शिक्षक के इस प्रकार के कार्य को उन्नत बनाने का नूतन अभिगम है प्रज्ञा।

प्र – प्रवृत्ति

ज्ञा – ज्ञान

प्रज्ञा अर्थात् प्रवृत्तियों के द्वारा ज्ञान प्रदान करना। गुजरात राज्य सरकार ने शिक्षा जगत में २०११ से प्राथमिक शिक्षा के बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए प्रज्ञा अभिगम का प्रारंभ किया गया है। प्रज्ञा अभिगम में बच्चों के लिए जूथ बनाकर विभिन्न प्रकार की प्रवृत्तियों के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करने की क्रिया की जाती है। इसमें स्वनिर्मित अध्ययन सामग्री का निर्माण करना, उसका प्रयोग करना और सहपाठी के साथ स्वगति एवं क्षमता अनुसार आनंददायी शिक्षा प्राप्त करना।

२. उद्देश्य

- कक्षा–८ के छात्रों के लिए संस्कृत व्याकरण में प्रज्ञा अभिगम कार्यक्रम की रचना एवं अजमायश करना।
- कक्षा–८ के लिए संस्कृत व्याकरण में प्रज्ञा अभिगम कार्यक्रम की असरकारकता का अध्ययन करना।

३. शोध विधि

प्रायोगिक विधि (पूर्व–उत्तर योजना) का प्रयोग किया गया है।

४. न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में बनासकांठा जिला की स्कूलों में से सहेतुक न्यादर्श का चयन किया। न्यादर्श के लिए कक्षा–८ का एक वर्ग के ६० छात्रों में से ३० छात्र एवं ३० छात्रा को संस्कार स्कूल, पालनपुर में से न्यादर्श का चयन किया था।

५. उपकरण

संस्कृत व्याकरण में प्रज्ञा अभिगम निम्नांकित उपकरणों का प्रयोग किया गया।

- श्राव्य टेप, सीडी, चार्ट एवं चित्र, रमतगमत फ्लेश कार्ड
- नाट्यीकरण, कटिंग्स, प्रत्यक्ष वस्तुएँ
- पूर्व उत्तर कसोटी से मूल्यांकन आदि उपकपरणों का प्रयोग किया।

६. प्रदत्तों का एकत्रीकरण एवं पृथक्करण

प्रदत्तों का एकत्रीकरण पूर्व–उत्तर कसोटी छात्रों को देकर एवं पृथक्करण के टी–मूल्य का उपयोग किया गया।

७. प्रदत्तो का विश्लेषण एवं अर्थघटन

परिकल्पनाएँ **:** कक्षा–८ के छात्रों की पूर्व कसौटी एवं उत्तर कसोटी के प्रदत्तों के बीच में सार्थक भेद नहीं होगा।

सारणी १ छात्रों की पूर्व कसोटी एवं उत्तर कसोटी के प्रदत्तों की सूचना सारणी

कसोटी	*छात्रोंकी संख्या*	*मध्यक*	*प्र. वि.*	*सरासरी*	*टी–मूल्य*	*सार्थकता की कक्षा*
पूर्व कसोटी	६०	१३.६३	७.९०	१.०२	१९.०३	०.०१
उत्तर कसोटी	६०	३०.३५	८.४०	१.०९		

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है की कक्षा–८ के ६० छात्रों को दी हुई कसोटी के आधार पर टी–मूल्य १९.०३ प्राप्त हुआ जो ०.०१ कक्षा के मूल्य से ज्यादा है। इसलिए परिकल्पना का अस्वीकार होता है। अर्थात् छात्रों की सरासरी प्राप्तांको के बीच भेद है। पूर्व कसोटी के प्राप्तांको में उत्तर कसोटी के प्राप्तांक ज्यादा है। इसलिए कह सकते है कि संस्कृत व्याकरण में प्रज्ञा अभिगम से अध्ययन ज्यादा सफल हुआ।

८. निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध में संस्कृत व्याकरण में प्रज्ञा अभिगम का प्रयोग से छात्रों में अध्ययन के प्रति रस एवं प्रेरणा ज्यादा जागृत होती है एवं प्रवृत्तिमय शिक्षा को छात्राएँ ज्यादा पढने में ध्यान देते है।

९. शिक्षा में उपयोग

शिक्षा में प्रवृत्ति इसलिए उत्तम है कि छात्रों को रमत गमत से प्राप्त ज्ञान अधिक ग्रहण करने में सरलता रहती है एवं प्राथमिक शिक्षा बुनियादी शिक्षा है। समाज निर्माण के आधार स्तंभ समान बच्चों की इस प्रकार की नूतन प्रवृत्तियों के माध्यम से बच्चे सहेतुक गुणलक्षी शिक्षा प्राप्त करके अपनी क्षमता को बढाकर जीवन सुद्दढ बनायें गे ही। इस तरह संस्कृत विषय में व्याकरण को पढाने में विभिन्न प्रवृत्तियाँ का चयन करके शिक्षा छात्रों को देने में सरलता प्रज्ञा अभिगम से उपयोगी रहेगी। अन्य विषय में भी यह प्रयोग उपकारक होगा।

संदर्भ सूचि

१. अफ्लूवाला, सी. के. (१९७२). संस्कृत अभिनव अध्यापन, भारत प्रकाशन, अहमदाबाद.
२. उचाट, डी. ए. (२०००). अनुसंधान की विशिष्ट विधियाँ, राजकोट.
३. पारेख, जी. उ. (२०१०). शिक्षण में आंकडाशास्त्र युनि. ग्रंथनिर्माण बोर्ड, गुजरात.